1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स एष एक एव वृदेक एव। अथर्व 13/4/20

वह ईश्वर एक है निश्चय से वह एक ही है।

God is one Surely He is the only one.

वर्ष 39, अंक 16 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 22 फरवरी, 2016 से रविवार 28 फरवरी, 2016
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द: 192 वार्षिक शुल्क: 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आरक्षण, व्यवस्था है या अधिकार?

ध्यान रहे कि किसी भी समाज में भिन्नताओं को स्वीकार करना उस समाज की एकता को बढ़ावा देता है न कि विघटन करता है। उदाहरण के तौर पर अमरीकी समाज ने जब-तक अश्वेत और श्वेत के सवाल को स्वीकार नहीं किया, तब तक वहाँ विद्रोह की स्थिति थी और जब इसे सरकारी तौर पर स्वीकार कर लिया गया, तब से स्थितियाँ बहुत सुधर गई हैं।

हमारे देश में प्रतिवर्ष लाखों-करोडों की सम्पत्ति तो मात्र इस वजह से आग के हवाले कर दी जाती है कि सरकार द्वारा हमारी मांगे मान ली जायें, चाहे वह वैध हो या अवैध मान ली जाएं। पिछले वर्ष गुजरात के पाटीदार आन्दोलन में लगभग दो सौ करोड़ की संपत्ति जलने की आग अभी ठंडी भी नहीं हुई थी कि अब हरियाणा धधक उठा। जिस तरह देश में आरक्षण का अधिकार पाने को हर रोज राजनीति का बिगुल बजता है उसे देखकर लगता है। आने वाले दिनों में आरक्षण बजाय एक व्यवस्था का एक अधिकार बन जायेगा। क्या वर्तमान आरक्षण की मांग को देखते हुए मूलरूप में संविधान के निर्माताओं के द्वारा आरक्षण की आवश्यकता और प्रासंगिकता को देखकर इस पर विचार किया जाए।

भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही असमानता रही है और इस असमानता के कारण कुछ वर्गों को नुकसान उठाना पड़ा है। लंबे समय तक असमानता का दंश झेलते और समाज में हाशिए पर धकेल दिए गए वर्गों के बीच उम्मीद की किरण उस समय जगी जब

अंग्रेजी शासन का खात्मा हुआ और लोकतांत्रिक सरकार का गठन हुआ; राष्ट्र को चलाने के लिए संविधान का निर्माण किया गया और संविधान निर्माताओं को यह महसूस हुआ कि भारत में असमानता का स्तर इतना अधिक है कि इसे दूर करने के लिए कुछ वर्गों को विशेष सुविधाएं दी जानी चाहिए जिसके कारण भारतीय संविधान में सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों के लिए विशेष उपबंध करने की बात कही गई। चूंकि भारत में असमानता का आधार जाति थी, इसके कारण सबसे पहले अनुसूचित जातियों (दलितों) तथा अनुसूचित जनजातियों(आदिवासियों) को आरक्षण दिया गया और बाद में पिछड़े वर्ग का निर्धारण कर उन्हें भी सरकारी नौकरियों में आरक्षण दिया गया। सीधे शब्दों में कहें तो यह व्यवस्था उन लोगों के लिए की गयी थी जिन्हें समाज में निर्बल, अछूत, और सामाजिक दृष्टि से हेय समझा जाता था।

आरक्षण के संदर्भ में यह बात शुरू से ही उठती रही है कि आखिर आरक्षण की आवश्यकता क्या है? क्या पिछड़े लोगों को सुविधाएं देकर उन्हें मुख्य धारा में नहीं लाया जा सकता है? यह सवाल जायज हो सकता है लेकिन ऐसे सवाल करने वालों को पहले यह जानना होगा कि आरक्षण दिया क्यों गया है! दरअसल आरक्षण दिए जाने के पीछे न्याय का सिद्धांत काम करता है, यानी राजा का कर्त्तव्य है कि वह सभी लोगों के साथ न्याय करे, न्याय को दो अर्थों में देखा जा सकता है। पहला कानून के स्तर पर और दूसरा समाज के स्तर पर, कानून के स्तर पर न्याय दिलाने के लिए न्यायपालिका का गठन किया गया जिसमें खामियां हो सकती है लेकिन उन खामियों

...शेष पेज 7 पर

सार्वदेशिक सभा के आह्वान पर समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं आर्यजनों से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

राष्ट्र द्रोही ताकतों के विरोध में आर्यसमाज का प्रदर्शन

सरकार द्वारा कड़ी कार्यवाही करवाने की मांग

आर्यसमाज अपने स्थापना काल से भारतीय राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के कार्यों में सहयोगी रहा है। आर्यसमाज सदैव से राष्ट्र विरोधी ताकतों का विरोध करता रहा है। जे. एन. यू. की घटना ने आज देश के समक्ष विकट स्थिति पैदा कर दी है, आज देश दो धड़ों - देशद्रोही एवं देशभक्त में बंटा सा नजर आ रहा है। ऐसे में हम सबका कर्त्तव्य है कि हम देश भक्तों का समर्थन और देशद्रोही कार्य करने वाले राष्ट्र विरोधी ताकतों का विरोध करें। अत: दिल्ली आर्यसमाज की ओर से जे.एन.यू. की घटना के विरोध में धरना-प्रदर्शन करके देश के प्रति अपने कर्त्तव्य व्यक्त करने का निर्णय लिया गया है जिससे कि राष्ट्र विरोधी ताकतों के हौसले पस्त हों। यह धरने-प्रदर्शन दिल्ली में रविवार 28 फरवरी, 2016 को एक ही समय प्रात: 10:30 से 12:30 बजे तक 11 अलग-अलग स्थानों पर किए जाएंगे।

प्रदर्शन स्थल	संयोजक	सह-संयोजक
मोती नगर चौक	ओम प्रकाश आर्य (9540077858)	सुरेन्द्र कोछड़ (9313260122)
उत्तम नगर चौक	वीरेन्द्र सरदाना (9911140756)	वेद प्रकाश आर्य (9873110044)
सागरपुर चौक	शिव कुमार मदान (9310474979)	सुखवीर सिंह आर्य (9540012175)
दयानन्द चौक	सुरेन्द्र आर्य (9811476663)	जोगेन्द्र खट्टर (9810040982)
राजघाट चौक	नितिञ्जय चौधरी (9810103680)	अरुण प्रकाश वर्मा (9540086759)
लक्ष्मी नगर चौक	सुरेन्द्र रैली (9810855695)	अभिमन्यु चावला (9899389251)
करोल बाग	कीर्ति शर्मा (9871277922)	रवि गुप्ता (9871000741)
पूर्वी कैलाश चौक	बलराज चौधरी (9871554596)	नरेन्द्र नारंग (9810140975)
युसुफ सराय	रविदेव गुप्ता (9818006185)	चतर सिंह नागर (9211501545)
कस्तूरबा नगर चौक	श्री अजय सहगल (9810035658)	विकास वर्मा (9810042636)
मोलड़बंद विस्तार	गजेन्द्र सिंह चौहान (9810594417)	श्याम सिंह आर्य (9582700801)

आपसे निवेदन है कि आप अधिक से अधिक संख्या में पहुंचे तथा अपने सब मित्रों, सहयोगियों तथा आर्यसमाज के सदस्यों को इसकी जानकारी मैसेज, व्हाट्अप्प, फेसबुक आदि माध्यमों से दें तथा अपने निकटवर्ती धरना-प्रदर्शन स्थल पर पहुंचकर आर्यसमाज की शक्ति एवं अपनी राष्ट्रभक्ति का प्रदर्शन करें।

-महामन्त्री, मो. 9958174441

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा के आगामी कार्यक्रम

ऋषि बोधोत्सव
दिनांक 7 मार्च 2016,
प्रात: 8 से सायं 4 बजे
स्थान- रामलीला मैदान, दिल्ली

नव संस्येष्टि (होली)
दिनांक 23 मार्च 2016, सायं 3 बजे
स्थान- रघुमल आर्य कन्या सी.सै. स्कूल, राजा बाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली

आर्य समाज स्थापना दिवस
दिनांक : 8 अप्रैल 2016, प्रात: 8 बजे
स्थान- फिक्की सभागार, 12 खम्बा रोड, निकट मण्डी हाउस मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली

समस्त आर्य समाजों से निवेदन है कि उपरोक्त तिथियों एवं समय में अपना कोई कार्यक्रम आयोजित न करें तथा अधिकाधिक संख्या में सभी कार्यक्रमों में पहुंचकर संगठन शक्ति का परिचय दें।

स्वाध्याय

मैं तुझे चाहता हूं

आ ते वत्सो मनो यमत् परमाच्चित्सधस्थात्। अग्ने त्वां कामया गिरा।।
– ऋ. 8/11/7; साम. पू. 1/1/1/8
ऋषिः-वत्सः काण्वः।। देवता-अग्निः।। छन्दः-निचृद्गायत्री।।

विनय- हे परमात्मन्! तुम्हारा स्थान बहुत ऊंचा है। तुम्हारे उत्कृष्ट पद को मैं कैसे पाऊं? तुम जिस दिव्यधाम में रहते हो, जिस सर्वशक्तिमय, सर्वज्ञानमय, परमानन्दमय लोक में तुम्हारा निवास है, उस परम स्थान तक मैं अल्पज्ञ, अल्पशक्ति, तुच्छ जीव कैसे पहुंच सकता हूं? परन्तु नहीं, मैं भी अन्ततः तुम्हारा पुत्र हूं, वत्स हूं, प्यारा अमृत-आत्मज हूं। मैं चाहे कैसा हीन व पतित होऊं पर स्वरूपतः अमर, चिन्मय आत्मा हूं, अतः तुम्हारा धाम मेरा भी धाम है, तुम्हारा ऊंचे से ऊंचा स्थान मेरा सहस्थान है, 'सधस्थ' है। तुम्हारे दिव्य-से-दिव्य स्थान से तुम्हारे पुत्र का अधिकार कैसे हट सकता है। मैं तुम्हें अपने प्रेम द्वारा तुम्हारे दूर-से दूर, ऊंचे से ऊंचे से पद से खींच लाऊंगा। हे पितः! मुझे सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ बनने की क्या आवश्यकता है? मैं तो अपने अगाध प्रेम से, अपनी अनन्य भक्ति से तेरे मन को काबू कर लूंगा, तेरे मन को पा लूंगा। फिर मुझे और क्या चाहिए? हे मेरे अग्ने! हे मेरे जीवन! मैं तुम्हें अपनी सर्वशक्ति से चाह रहा हूं, कामना कर रहा हूं। आत्मा में तुमने जो वाणी नाम्नी आत्मशक्ति रखी है, मैं उसकी सम्पूर्ण शक्ति से तुम्हें ही खींच रहा हूं। मैं अपनी आन्तर और बाह्य वाणी की समस्त शक्ति को तुम्हारे मिलन के लिए ही व्यय कर रहा हूं। मन में तेरी ही चाह है, मन में तेरा ही जाप है, तेरी ही रटन है; 'वैखरी' वाणी में भी तेरा ही नाम है, तेरा स्तोत्रपाठ है; शरीर की चेष्टाओं से भी जो कुछ अभिव्यक्त होता है वह तेरी लगन है, तेरे पाने की तड़प है। क्या तू अब भी नहीं मिलेगा? मैं तेरा वत्स इस तरह से, हे पितः! तेरे मन को हर ही लूंगा। तू चाहे कितने ऊंचे स्थान का वासी हो, पर तेरे मन को जीत के ही छोड़ूंगा। मेरा प्रेम, मेरी भक्ति तेरे मन को खींच लेगी और फिर तेरे मन को, तेरे प्रेम व वात्सल्य को, मुझे अपनाना होगा।

शब्दार्थ- वत्सः- मैं वत्स ते मनः- तेरे मन को परमात् चित्- अति-उत्कृष्ट भी सधस्थात्- सहस्थान से आ यमत्-वश करता हूं, प्राप्त करता हूं, अग्ने- हे परमेश्वर। मैं त्वाम्-तुझे गिरा -वाणी द्वारा कामये- चाहता हूं-मिलना चाहता हूं।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

शहादत की राजनैतिक परिभाषा

आजकल फेसबुक ट्विटर और राजनैतिक गलिहारो में एक जंग सी छिड़ी हुई है, सब देशभक्ति को अपने तरीके से व्याख्या करने में लगे हुए हैं। हर किसी के शाहदत के देशभक्ति के अपने अलग-अलग मापदंड हो गये। कभी सोचा नहीं था कि शहादत की परिभाषा इतनी संकुचित भी हो सकती है, जितनी पिछले दिनों से हिंदुस्तान में हो गयी। अब तो यहाँ हर कोई शहीद है। जब हरियाणा में जगह-जगह लोग ट्रेन की पटरी उखाड़ रहे थे, तब कैप्टन पवन कुमार, कैप्टन तुषार महाजन, समेत 5 जवान देश के दुश्मनों से लोहा लेते हुए हमारी हिफाजत कर शहीद हो गये। किन्तु जितना दुःख हमें उन वीरों की शाहदत का है उससे ज्यादा इस बात का है कि धर्म और राष्ट्र का सम्मान करते-करते जो प्राण स्वाह कर जाये वो तो शहीद है किन्तु जो देश में दंगा फसाद करता-करता मारा जाये क्या वो भी शहीद है? 6 दिन-रात 35 फिट बर्फ के नीचे जिन्दगी और मौत से लड़ने वाला हनुमंतथप्पा भी शहीद और मुंबई में एक हजार लोगों को मारने वाला याकूब मेनन भी शहीद, बाटला हाउस में मरने वाले आतंकी भी शहीद और इंस्पेक्टर मोहन चंद्र शर्मा भी शहीद, इशरतजहाँ, कसाब ना जाने इनके लिए कितने लोग शहीद है और तो और इस देश में तो कंकर पत्थर से बनी मस्जिद भी शहीद हो जाती है। वो कहते हैं न जो राष्ट्र की रक्षा करते हैं राष्ट्र उनकी रक्षा करता है। देशभक्त वही है जो देशवासियों का सम्मान करता है।

क्या देश के तथाकथित राजनेताओं की मति सत्ता की चाह में इतनी कुंठित हो गयी है कि वो हर किसी की चिता को शहीद बनाकर कुर्सी पूजन कर दीपावली मना रहे हैं। अजीब विडम्बना देखो- कैप्टन पवन कुमार भी शहीद हुआ उसके लिए विपक्ष के किसी नेता के पास दो शब्द नहीं थे। किन्तु उन दंगाइयों के जो सेना के जवानों पर तमंचे से फायर झोंक रहे थे उन्हें मरणोंपरांत कुछ समय बाद ही लोगों ने शहीद बना दिया। खाली इन्हें ही क्या कहें यहाँ तो हर कोई शहीद है। संसद पर हमला करने वाला अफजल भी शहीद है और उसकी रक्षा करते-करते अपने प्राण गवाने वाले जवान भी शहीद। क्या वीरगति को प्राप्त हुए जवानों के साथ इससे बड़ा मजाक कुछ हो सकता है? कितने लोग जानते है कि लोकतंत्र के मंदिर की रक्षा करते हुए शहीद होने वाले जवानों को बहुत कम लोग ही जानते हैं कि लोकतंत्र पर हुए इस सबसे बड़े हमले में दिल्ली पुलिस के पांच जवान, सीआरपीएफ की एक महिला कांस्टेबल, संसद के दो गार्ड, संसद में काम कर रहा एक माली और एक पत्रकार शहीद हो गए थे। आखिर ऐसा क्यों...कि हमें फिक्र है आतंकियों की तभी शायद कश्मीर में अफ्सा हटाने की बात होती है स्मरण रहे आतंकी का मिशन होता है किन्तु सेना के जवान सिर्फ हमारी रक्षा के लिए खड़े है लेकिन हम जरा भी चिंता नहीं करते उन सजग प्रहरियों और सुरक्षाकर्मियों की जिनके कारण आज हम सुकून की नींद सोते हैं, लोकतंत्र की खुली हवा में सांस लेते हैं। आज का युवा नेताओं के झंडे उठाकर उनके मान-सम्मान की बहुत फिक्र पालता है, लेकिन वह उन नेताओं से यह नहीं पूछता कि आखिर क्या हुआ जेल में बंद हमारे दुश्मनों का और क्या किया जा रहा है शहीदों के परिजनों के लिए? नेता ही क्या आज कई मामलों में युवा भटकता दिखाई दे जाता है। चौराहों पर नवयुवकों के हाथों में आतंकियों के पोस्टर थमाकर देश के विरुद्ध नारे लगवाये जाते हैं, किन्तु शहीद हनुमंतथप्पा का नाम भी उसकी चिता के साथ अग्नि में प्रवाहित सा कर दिया जाता है।

आखिर यह नौबत क्यों आती है कि शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए तमाम दलों के नेता व सांसद क्यों एक नहीं होते। देश सबका है, सेना बिना भेदभाव किये हमारी रक्षा करती है तो क्या हम उनके लिए बिना भेदभाव प्रार्थना नहीं कर सकते। आज मीडिया भी नेताओं के साथ दिनभर उमर खालिद, कन्हैया की चर्चा करते रहते हैं लेकिन कितने शहीदों के घर आज चूल्हा जला की नहीं इसकी किसी को परवाह नहीं है। हर वर्ष शहीदों के परिजनों को झूठे वादे के साथ शाल और श्रीफल देकर विदा कर दिया जाता है। आज इस कारण हम सब मजबूर हो कर सुन रहे हैं। भारत तेरे टुकड़े होंगे इंशाअल्लाह-इंशाअल्लाह, भारत की बर्बादी तक जंग जारी रहेगी हम किसी सम्प्रदाय या व्यक्ति को दोष नहीं दे रहे है बस उस व्यवस्था को प्रश्न कर रहे है जो राजनैतिक व्यवस्था बनकर राष्ट्र भक्तों का शोषण कर रही है। कृपया सोचो आखिर इस बारे में सोचना किसे है?

-सम्पादक

प्रेरक प्रसंग

पण्डित भोजदत्तजी आगरावाले आगे निकल गये

श्री पंडित भोजदत्तजी आर्य पथिक पश्चिमी पंजाब में तहसील कबीरवाला में पटवारी थे। आर्यसमाजी विचारों के कारण पंडित सालिगरामजी वकील प्रधान मिण्टगुमरी समाज के निकट आ गये। पण्डित सालिगराम कश्मीरी पंडित थे। कश्मीरी पण्डित अत्यन्त रूढ़िवादी होते हैं इसी कारण आप तो डूबे ही हैं साथ ही जाति का, इनकी अदूरदर्शिता तथा अनुदारता से बड़ा अहित हुआ है। आज कश्मीर में मुसलमानों ने (कश्मीरी पंडित ही तो मुसलमान बने) इन बचे-खुचे कश्मीरी ब्राह्मणों का जीना दूभर कर दिया और अब कोई हिन्दू इस राज में-कश्मीर में रह ही नहीं सकता। पंडित सालिगराम बड़े खरे, लगनशील आर्य पुरुष थे। आपने बिरादरी की परवाह न करते हुए अपने पौत्र का मुण्डन-संस्कार विशुद्ध वैदिक रीति से करवाया। ऐसे उत्साही आर्यपुरुष ने पंडित भोजदत्तजी की योग्यता देखकर उन्हें आर्यसमाज के खुले क्षेत्र में आने की प्रेरणा दी। पंडित भोजदत्त पहले पंजाब सभा में उपदेशक रहे फिर आगरा को केन्द्र बनाकर आपने ऐसा सुन्दर, ठोस तथा ऐतिहासिक कार्य किया कि सब देखकर दंग रह गये। आपने मुसाफिर पत्रिका भी निकाली। सरकारी नौकरी पर लात मार आपने आर्य समाज की सेवा का कण्टकाकीर्ण मार्ग अपनाया। इस उत्साह के लिए जहां पंडित भोजदत्त जी वंदनीय हैं वहां पंडित सालिग-रामजी को हम कैसे भुला सकते हैं जिन्होंने इस रत्न को खोज निकाला, परखा तथा उभारा।

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30-8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

वैज्ञानिक भारत के निर्माण में ऋषि दयानन्द का योगदान

मंगल ग्रह में पूरी मंगलता के साथ अपने कदम रखने वाला आज का भारत वैज्ञानिक दृष्टि से सम्पन्न है, यह कहने या स्वीकारने में किसी को कोई हिचक या संकोच नहीं होना चाहिए। भारत सम्पूर्ण विश्व में आज अकेला ऐसा देश है, जो प्रथम प्रयास में मंगल पहुंचा है। भारत में ऋषि मुनियों के काल से ही वैज्ञानिक दृष्टि को विकसित करने का चिंतन चलता रहा है। जिन्हें हम ऋषियों के नाम से जानते हैं, प्राचीनकाल में वे तपोधर्मी महामना उस काल के महान वैज्ञानिक ही थे। शून्य की खोज भारत के ऋषियों का ही प्रताप है। विमान शास्त्र के प्रणेता महामुनि भारद्वाज यंत्र कौशल के पुरोधा थे। ऋग्वेद की प्रथम ऋचा में ही अग्नि को गति का प्रतीक बताया गया है। भारत के कदम मंगल में पड़ चुके हैं। अभी विश्व के पास यह सवाल बना हुआ है कि मंगल में जीवन की अन्वेषणा की जाए या जीवन को मंगल बनाए रखने का प्रयास किया जाए। महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण जीवन को मंगलमय बनाने की दिशा में आगे बढ़ने के लिए एक मील का पत्थर है।

चेतन भगत ने कहा है कि हम मंगल में पहुंचने के बाद भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अभी बहुत पीछे हैं। जाति पाति से लेकर अंधविश्वासों की एक लम्बी फेहरिस्त हम सबके सामने है, जो चेतन भगत की बातों को प्रमाणित करती हैं। आज दीपावली के दिन हम महर्षि दयानन्द सरस्वती का 131 वां निर्वाण दिवस मना रहे हैं। स्वामी दयानन्द से पूर्व धर्म का विज्ञान से सम्बन्ध प्राय: नकारा जाता रहा था। गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन में जब स्वामी दयानन्द का प्रभाव नहीं था, तब वे वकालत करते थे और मानव जीवन की सभी कमजोरियों से ग्रस्त थे। उन दिनों उन्हें मुंशीराम के नाम से जाना जाता है। मुंशीराम के पिता ने आग्रह किया कि वे स्वामी दयानन्द के व्याख्यान को सुनने जाएं। मुंशीराम तब अंग्रेजी उपन्यास पढ़ते थे और नास्तिकवादी थे। उन्हें स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रति कोई रुचि नहीं थी। वे वैसा ही सोचते थे, जैसा आज का अंग्रेजी पढ़ा-लिखा व्यक्ति सोचता है। उन्होंने अपनी आत्मकथा कल्याण मार्ग का पथिक में लिखा है कि मैं कभी सोच भी नहीं सकता था कि कोई संस्कृत पढ़ा-लिखा भगवाधारी व्यक्ति तर्क अथवा विज्ञान की कसौटी पर स्वयं को परखने के लिए तैयार होगा। स्वामी दयानन्द के व्याख्यानों को सुनने के पश्चात् मुंशीराम की यह धारणा पूरी तरह से खंडित हो गई। स्वामी दयानन्द ने अपने समकालीन महात्मा पदधारी व्यक्तियों के समान कोई भी अवैज्ञानिक विचार जनता के सामने नहीं रखे। वे धर्म को ज्ञान और विज्ञान की कसौटी पर ही कसने के पक्षधर थे।

टाइम्स स्केवयर, न्यूयार्क में दिए अपने व्याख्यान में भारत के वर्त्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा था-'पहले विदेश के लोग भारत के बारे में ऐसा प्रचार करते थे (मानते थे) कि भारत के बच्चे सांपों से खेलते हैं। मैं उनको बताना चाहता हूं कि अब भारत के बच्चे सांप से नहीं कम्प्यूटर के माउस से खेलते हैं। कुछ लोगों ने इस पर ऐतराज भी जताया पर सच यही है कि भारत की छवि कभी भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले भारत की नहीं रही है। यह एक संयोग ही है कि भारत के प्रधानमंत्री भी उसी गुजरात से हैं, जहां स्वामी दयानन्द का जन्म हुआ था।

स्वामी दयानन्द ने अपने वेद भाष्य की भूमिका में स्पष्ट किया है कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।' वेद के अनेक मन्त्रों में स्वामी दयानन्द ने भू गर्भ विद्या, नौ विद्या, विमान विद्या, भवन निर्माण, शिल्पकला सहित अनेक विद्याओं तथा कलाओं को वेद मन्त्रों से प्रमाणित किया है। स्वामी जी ने ज्ञान विज्ञान का आदि स्रोत वेद को माना है। स्वामी जी का मानना था वेद धार्मिक नहीं वैज्ञानिक ग्रन्थ है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करने में स्वामी जी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। स्वामी दयानन्द मानते थे कि शिक्षा में धार्मिक तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने की वकालत करते हैं। स्वामी दयानन्द ने अन्धविश्वास, बाल-विवाह, सती प्रथा, नारी-अशिक्षा की पुरजोर विरोध की वकालत की है। स्वामी जी नारी-शिक्षा, प्रकृति-रक्षा तथा शुद्ध सात्विक जीवन के प्रबल पक्षधर थे। मध्य भारत में वे पहले अध्यात्मिक संत और समाज सुधारक थे जिन्होंने गार्गी और मदालसा का उदाहरण देकर महिलाओं को ससम्मान लक्ष्मी, दुर्गा जैसी देवियों के रूप में प्रतिष्ठापित करने का प्रयास किया। उन्होंने मनु के वचनों को उद्धृत करते हुए बताया था कि जिस समाज में नारी का सम्मान होता है, वहां देवता प्रसन्न होकर वास करते हैं। जहां इनका अपमान होता है, वहां समस्त क्रियाएं फलहीन हो जाती है। स्वामी जी मानते थे कि चमत्कारों के चक्कर में व्यक्ति अपना तन-मन और धन सब खो देता है।

स्वामी दयानन्द जी के बारे में महापुरुषों के विचार

स्वामी दयानन्द के विचार किसी संप्रदाय विशेष के लिए नहीं हैं। उन्होंने प्रत्येक मतावलंबी को सत्यार्थ समझने में मदद की है। उनके विचार मानवता का पोषण करते हैं। डॉ. भगवान दास ने कहा था कि स्वामी दयानन्द हिन्दू पुनर्जागरण के मुख्य निर्माता थे। श्रीमती एनी बेसेन्ट का कहना था कि स्वामी दयानन्द पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने आर्यावर्त (भारत) आर्यावर्तियों (भारतीयों) के लिए' घोषणा की। सरदार पटेल के अनुसार भारत की स्वतन्त्रता की नींव वास्तव में स्वामी दयानन्द ने डाली थी। पट्टाभि सीतारमैया का विचार था कि गांधी जी राष्ट्रपिता है पर स्वामी दयानन्द राष्ट्र-पितामह हैं। फ्रेंच लेखक रोमां रोला के अनुसार स्वामी दयानन्द राष्ट्रीय भावना और जन-जागृति को क्रियात्मक रूप देने में प्रयत्नशील थे। एक अन्य फ्रेंच लेखक रिचर्ड का कहना था कि ऋषि दयानन्द का प्रादुर्भाव लोगों को कारागार से मुक्त कराने और जाति बन्धन तोड़ने के लिए हुआ था। स्वामी जी को लोकमान्य तिलक ने 'स्वराज्य का प्रथम सन्देशवाहक' कहा। नेताजी सुभाष चन्द बोस ने स्वामी जी को 'आधुनिक भारत का निर्माता' माना। अमेरिका की मैडम ब्लेबेट्स्की ने स्वामी जी को 'आदि शंकराचार्य के बाद बुराई पर सबसे निर्भीक प्रहारक' माना। सैयद अहमद खां के शब्दों में 'स्वामी जी ऐसे विद्वान और श्रेष्ठ व्यक्ति थे, जिनका अन्य मतावलम्बी भी सम्मान करते थे।'

आज दिनांक 27 अक्टूबर 2014 को जब छत्तीसगढ़ की राजधानी में जुटे महर्षि दयानन्द के अनुयायी स्वामी दयानन्द का निर्वाण दिवस मना रहे थे, दैनिक भास्कर में एक हृदय विदारक समाचार प्रकाशित हुआ है। यह समाचार उपन्यासकार चेतन भगत की उस बात को प्रमाणित करता है जिसमें उन्होंने कहा था कि अभी भारत में वैज्ञानिक सोच को विकसित करने की दिशा में कार्य करने के लिए काफी कुछ करना शेष है।

छत्तीतगढ़ की राजधानी से लगभग सौ किलोमीटर से भी कम की दूरी में एक महिला को टोनही कहकर परिवार वालों के साथ मिलकर ग्रामवासियों ने दर्दनाक मौत दे दी है। उस निर्दोष महिला के कोमल अंगों में मिर्च भरकर उसे तड़पाया गया था। यह समाचार यहां दैनिक भास्कर के प्रथम पृष्ठ पर पढ़ा गया है। आज भी हमारा विश्वास अंधा है। हम अभी भी धर्म के उन तथाकथित ठेकेदारों की अगवानी स्वीकार कर रहे हैं जिनकी बुद्धि में कहीं भी विज्ञान और तर्क से अनुप्राणित जीवंत विचार विद्यमान नहीं हैं। पुरी के शंकराचार्य ने फिर इस बात को दोहराया है कि मंदिरों में निम्न जाति के लोगों का प्रवेश निषिद्ध होना चाहिए। भारत के संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकारों का कुछ लोग अपने निहित स्वार्थों अथवा पूर्वाग्रहों के लिए मजाक बनाने से नहीं चूकते हैं। आश्चर्य तब होता है, जब ऐसा कार्य विरक्त संत कहे जानेवाला व्यक्ति करता है। क्या हम ऐसा करके स्वयं ईश्वर पर भेदभाव का आरोप नहीं लगा रहे हैं। अब कुछ शोषित तबके के लोग इस बात पर भी विचार ला रहे हैं कि उनके गांवों में ऐसे मंदिरों का निर्माण किया जाए जहां ऐसे तथाकथित सवर्णों के प्रवेश को निषिद्ध बताने का बोर्ड लगाया जाए। हो सकता है कि यह बात आज मजाक में की गई हो, पर इस तरह के बयान इसे सत्य करने का मार्ग दिखा रहे हैं।

आज अछूतोद्धार को भी राजनीति का केंद्र बना दिया गया है। स्वामी दयानंद के विचारों के अनुसार संसार में सभी शूद्र की ही भांति उत्पन्न होते हैं। जन्म से कोई ब्राह्मण नहीं होता। व्यक्ति के विचार, कर्म, सोच और संकल्पपूर्ण साधना ही उसे संस्कारित करती है। यह विचार ही अछूत समझे जाने वाले लोगों के उद्धार का सच्चा मार्ग प्रशस्त करता है। दुनिया में कोई निम्न नहीं है जिसके विचार और कर्म निम्न हैं, वह निम्न और जिसके विचार परिष्कृत हैं, वह सम्मान प्राप्त करने के योग्य है।

स्वामी जी ने 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' में ऐसे अनेक उदाहरणों तथा प्रसंगों का रहस्य प्रकट किया है- देवासुर संग्राम, अहिल्या आदि की कथाओं में छिपे वैज्ञानिक तथा तार्किक रहस्य को स्वामी जी ने अपनी मेधा से प्रकाशित किया है। वेदों में शब्दों के अर्थ और है और लोक में और (अन्य) निघंटु जैसे वैदिक शब्दकोष मं 'अहि' शब्द जल का वाचक है। लौकिक संस्कृत मे यही शब्द सर्प का वाचक है। इसीलिए वेदों में जब रूद्र का आभूषण लिखा गया तब अल्पज्ञ लोगों ने रूद्र के गले मे सर्प की कपना कर ली 'अहि'। महर्षि दयानन्द भाषा विज्ञान को भी वेदार्थ समझने के लिए आवश्यक समझते थे। बिना प्रसंग के उचित भाव अथवा अर्थ को ग्रहण नहीं किया जा सकता। उन्होंने स्पष्ट किया है कि सैन्धव पद का अर्थ घोड़ा भी है और नमक भी। कोई यात्रा के लिए तैयार होते हुए अपने सेवक को सैन्धव लाने का निर्देश दे तो उसका अर्थ घोड़ा होगा। भोजन के प्रसंग में इसी पद का अर्थ नमक होगा। अन्धविश्वास के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती के इन वचनों को ध्यान में रखने की जरूरत है।

स्वामी जी तथाकथित चमत्कार का विरोध

...शेष पेज 7 पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिवस धूमधाम से मनाया

आर्य समाज डी ब्लॉक विकासपुरी में महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिवस 12 फरवरी को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर भजन संध्या का कार्यक्रम एवं लघु नाटक भी स्वामी जी के कार्यों पर आर्य समाज की वीरांगना दल ने प्रस्तुत किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान जी सहित अन्य पदाधिकारियों ने भी भजन-संध्या में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। महिलाओं-पुरुषों और बच्चों की संख्या 400 से ऊपर रहीं। कार्यक्रम बहुत सफल रहा।

-प्रधान

डॉ. राजदीप का सम्मान करते श्री हरिश कालरा व दि.आ.प्र. सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य जी।

श्री सत्यपाल पथिक जी का सम्मान करते श्री हरीश कालरा, श्रीमती ज्योति ओबराय, श्री ओपी घई।

वैदिक मिशन मुम्बई के तत्त्वावधान में
वेद-वेदांग ज्योतिष सम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से, वैदिक मिशन मुम्बई द्वारा आर्य समाज सान्ताक्रूझ मुम्बई में वेद(वेदांग) ज्योतिष सम्मेलन दिनांक 26 से 27 मार्च 2016 को आयोजन किया जा रहा है जिसमें विद्वानों द्वारा ग्रह - उपग्रह -नक्षत्र -लग्न- मुहूर्त, जन्म कुण्डली, शुभ- अशुभ गणित और फलित ज्योतिष आदि विविध विषयों पर गहन चिन्तन किया जायेगा। **-मन्त्री**

वैदिक वीरांगना दल जयपुर द्वारा
वैदिक बाल मेले का आयोजन

वैदिक वीरांगना दल, जयपुर के तत्त्वावधान में दिनांक 6 फरवरी 2016 को वैदिक बाल मेले का आयोजन मालवीय नगर में जयपुर में किया गया। मेलों को वैदिक स्लोगनों से सजाया गया था। मेले में बालिकाओं द्वारा हाथ से बनी वस्तुओं की प्रदर्शनी लगाई गई। इस अवसर पर बालिकाओं को राष्ट्रीय ध्वज व रूमाल भेंट किये गये। मेले की संचालिका श्रीमती दुर्गा शर्मा ने बताया कि वेदों में व्यापारिक व्यवसाय के विषय में अनेक मंत्र है और इस मेले का उद्देश्य बालिकाओं में आत्मविश्वास जगाना है। इस अवसर पर दल की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती अनामिका शर्मा ने ग्रीष्मावकाश में बालिका शिविर लगाने की घोषणा की।

-अनामिका शर्मा, राष्ट्रीय अध्यक्षा

भजनोपदेशक पं. नरेशदत्त आर्य (बिजनौर) उ. प्र. द्वारा निर्मित वेदरथ द्वारा प्रचार कार्य सम्पन्न

16 जनवरी से 7 फरवरी 2016 तक मध्य प्रदेश के तीन जिलों में प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. नरेशदत्त आर्य (बिजनौर) उ. प्र. द्वारा निर्मित वेदरथ से प्रचार करवाया गया। ट्रेक्टर चालित इस रथ के द्वार खोलने पर गायत्री मंत्रनुमा बन जाता है जिसके अन्दर आर्य साहित्य विक्रय हेतु उपलब्ध है। इस रथ को 3 जनपदों के कुसली, सुनाचर, श्रीधाम, तिघरा, चरगवां, कमोद, लोन पिपरिया, देवरी, रानी पिन्डरई नरसिंगपुर, सिंगपुर, दिघोरी (गाडरवाडा), राजथरी (बनखेडी) पिपरिया, बमूरिया(होशंगाबाद) आदि 15 स्थानों में प्रचार हेतु ले जाया गया। अनेक ग्राम व नगर ऐसे थे जहां आर्य समाज की विचारधारा अभी तक पहुंची ही नहीं थी। पं. नरेद्र दत्त आर्य, वयोवृद्ध पं. मामचंद आर्य पथिक व पं. नरेशदत्त आर्य के उपदेश के बाद यात्रा के संयोजक आचार्य आनन्द पुरुषार्थी के व्याख्यान होते रहे। गुरुकुल होशंगाबाद के वरिष्ठ अध्यापक डॉ. उमेश शास्त्री का सहयोग भी प्राप्त हुआ। होशंगाबाद की डोलरिया तहसील के बमूरिया ग्राम में रथ यात्रा के समापन समारोह में पन्च कुंडीय यज्ञ स्वामी ऋतसपति जी द्वारा करवाया गया।

-संयोजक

'दिल्ली के आर्य समाजों का इतिहास' ग्रन्थ प्रकाशन कार्य प्रगति की ओर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रकाशित होने वाले 'आर्य समाजों का इतिहास' ग्रन्थ का लेखन कार्य प्रगति पर है जिन आर्य समाजों ने अभी तक अपने समाज का इतिहास दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को नहीं भेजा है, वे शीघ्र अतिशीघ्र अपने समाज का इतिहास स्पष्ट अक्षरों में लिखकर 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के पते पर प्रेषित करें जिससे उन्हें भी इस ग्रन्थ में प्रकाशित किया जा सके। **-विनय आर्य, महामंत्री**

गुरुकुल हरिपुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल हरिपुर,जुनानी जि.नुआपड़ा का त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव दिनांक 29 से 31 जनवरी 2016 को श्री खुशहाल चन्द्र आर्य कोलकाता के करकमलों द्वारा ओ३म् ध्वजारोहण के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में स्थानीय विधायक एवं ओड़िशा बी.जे.पी. अध्यक्ष श्री बसन्त कुमार पण्डा जी के सहयोग से निर्मित गुरुकुल प्रवेशद्वार का लोकार्पण, गुरुकुल प्रधान श्री जयदेव आर्य जी के सहयोग से प्रकाशित ओड़िया सत्यार्थ प्रकाश विमोचन किया गया। साथ ही पांच कमरों का उद्घाटन हुआ। गुरुकुल में अध्ययनरत ब्रह्मचारियों का विविध शारीरिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। ओड़िशा के दो मूर्धन्य विद्वान डॉ. देवव्रत आचार्य जी एवं श्री प्रियव्रतदास जी का अभिनन्दन किया गया।-**दिलीप कुमार जिज्ञासु, आचार्य**

आर्य पब्लिक स्कूल द्वारा
बसंत पंचमी उत्सव धूम-धाम से सम्पन्न

आर्य पब्लिक स्कूल राजा बाजार परिसर दिल्ली में 12 फरवरी 2016 को बसंत पंचमी के उपलक्ष में प्रधानाचार्या श्रीमती उषा रिहानी के नेतृत्त्व में विद्यालय प्रांगण में यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आर्य विद्या परिषद की श्रीमती वीना आर्या जी ने बच्चों को यज्ञ की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में पीले वस्त्र धारण किये। बच्चों, अध्यापिकाओं तथा चारों ओर लगे पीले गुब्बारों ने वातावरण को वसंती रंग में रंग दिया। बच्चों के उत्साह तथा यज्ञ की सुगंध ने उत्सव के आनन्द में चार-चांद लगा दिये। **-प्रधानाचार्य**

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा बच्चों के
ज्ञान विकास के लिए कॉमिक्स श्रृंखला

मूल्य प्रति कॉमिक्स 30/-

बच्चों के चित्त पर जो संस्कार चित्रावली देखकर अंकित हो सकते हैं वह मोटी-मोटी पुस्तकों-ग्रन्थों को पढ़ने या सुनने से अंकित नहीं हो सकते। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने समाज में व्याप्त कुरीतियों, पाखण्ड और अन्धविश्वास दूर करने के उद्देश्य से अनेक ग्रन्थों की रचनाएं की, इसी प्रकार देश की आजादी के लिए अनेक आर्य नौजवान हंसते-हंसते फांसी के फंदे पर चढ़ गये। इन सबके दृष्टान्तों का वर्णन अनेक साहित्यकारों/लेखकों ने अपनी-अपनी भाषा शैली में किया लेकिन बच्चों के मानसपटल पर इन सब की छाप इन ग्रन्थों-पुस्तकों से इतनी सुगमता से नहीं पड़ सकती जितनी कि बच्चों को उनकी सरल भाषा में चित्रावली के साथ समझाया जा सकता है। इसी दृष्टिकोण से आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा बच्चों के ज्ञान-विचास के लिए कॉमिक्स की एक ऐसी श्रृंखला प्रकाशित की है जिसके अन्तर्गत महर्षि दयानन्द सरस्वती, एवं उनके अनुयायियों, आजादी के वीर योद्धाओं के चरित्र को दर्शाया गया है। ये सभी कॉमिक्स दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन कार्यालय 15 हनुमान रोड, दिल्ली-01 पर उपलब्ध हैं। भविष्य में ये कॉमिक्स श्रृंखला हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी व अन्य भारतीय भाषाओं में भी उपलब्ध कराने की योजना है।

आर्य सन्देश

यदि आपको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त नहीं हो रहा है या आप आर्य सन्देश के लिए कोई सुझाव या शिकायत करना चाहते हैं तो हमारी ई-मेल आई डी. aryasandeshdelhi@gmail.com पर मेल करें। साथ ही आप अपनी ई-मेल आई डी. भी लिखकर भेजें जिससे आपके पास आर्य सन्देश मेल के जरिए भेजा जा सके। -सम्पादक

यज्ञ का अर्थ एवं महत्व

1. 'यज्ञ' शब्द का अर्थ देवपूजा (ईश्वर की भक्ति, विद्वानों एवं माता-पिता का सम्मान और अग्नि आदि पदार्थों की उपयोगिता तथा शुद्धि) संगतिकरण (परस्पर सबका मिलना) दान (श्रद्धा से दान तथा परोपकार करना) है।

2. 'यज्ञ कुण्ड' शब्द का भाव है यज्ञ करने के लिए जो कुण्ड है, वह अपने अन्दर समिधा, अग्नि और सामग्री को समाहित कर लेता है।

3. 'हवन' शब्द का अभिप्राय है हवन-कुण्ड में अग्निदेव को श्रद्धा से आहुति देना और अग्निदेव द्वारा वायुदेवता को शुद्ध करके प्राण-शक्ति और वातावरण का संवर्धन तथा पवित्रीकरण।

4. 'वेदि: उ शम् अस्तु' (शान्तिकरण मंत्र 7) अर्थात् यज्ञवेदी निश्चय से सुख और शान्ति देने वाली हो।

5.'यज्ञों वै श्रेष्ठतमं कर्म' (श.ब्रा. 1,6,1,5) यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है।

6. 'देवा: यज्ञेन यज्ञम् अयजन्त' (यजुर्वेद 31,16) विद्वान देवताओं ने यज्ञ के द्वारा यज्ञरूप परमेश्वर का यजन किया।

7. 'अग्नि होत्रं जुहुयात् स्वर्गकाम:' (मै.उ. 6,36) स्वर्ग की कामना वाला अग्नि होत्र करें।

8. 'ईजाना: स्वर्ग यन्ति' (अथर्ववेद 18, 4, 2) यज्ञ करने वाले को सुख और समृद्धि मिलती है।

9. 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' (यजुर्वेद 23,62) यह यज्ञ विश्व शरीर का नाभि रक्षण केन्द्र है।

10. 'हरितं होतृषदनम्' (अथर्ववेद) यज्ञ करने वाले का घर हमेशा हरा-भरा रहता है।

11. 'अन्नादम् अग्निम् अन्नाद्याय आदधे' (यजुर्वेद 3,5) हव्य द्रव्यों का भक्षण करने वाली अग्नि को अन्नादि पदार्थों की प्राप्ति के लिए मैं (यजमान) यज्ञकुण्ड में स्थापित करता हूं।

12. 'अग्ने उदबुध्यस्व प्रतिजागृहि' (यजुर्वेद 15,54) यज्ञ की अग्नि कुण्ड में उद्दीप्त और अच्छी तरह से प्रज्वलित होकर प्रकाशित हो।

13. 'त्वम् अयम् च इष्ट-आपूर्ते संसृजेथाम्' (यजुर्वेद 15,54) यज्ञाग्नि तुम और यह यजमान इष्टकर्म (ईश्वरभक्ति, सत्संग, विद्यादान आदि) पूर्तकर्म (अन्नदान, धनदान, परोपकार के कार्य आदि) को मिलकर संपादित करो।

14. 'अस्मान् प्रजया पशुभि: ब्रह्मवर्चसेन अन्नाद्येन समेधय: (आश्व गृ. 1,10,12) यज्ञाग्नि तुम हम (यजमान) को उत्तम संतान, गौ आदि पशु, विद्या, ज्ञान और आत्मिक तेज तथा अन्न आदि पदार्थों। से बढ़ाओ।

15. 'देव: यज्ञपति भगाय प्रसुव' हे दिव्य गुणयुक्त प्रभा। यज्ञकर्ता को यज्ञकर्म की वृद्धि और ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए प्रेरित करो।

16. 'अग्ने आयूंषि पवस' हे अग्निरूप प्रभो! मेरे जीवन को पवित्र करो।

17. 'वरुण मे इमं हवं श्रुधि अद्य च मृडय: हे व्यापक प्रभो! मेरी इस पुकार को सुनो और आज ही सुखी कर दो।

18. 'ब्रह्मणा वन्दमान: यामि- मैं आपकी वेदमंत्रों से वंदना करता हुआ प्राप्त होता हूं।

19. 'अया न: यज्ञं वहासि- हे व्यापक प्रभो! आप हमारे यज्ञ को पूर्ण करते हो।

20. 'मा यज्ञं यज्ञपति मा हिंसिष्टम्- कभी भी यज्ञ (शुभकार्य) और यज्ञपति (यजमान) को हानि न पहुंचायें।

21. 'सुहुतं करोतु मे' हे प्रभो! मेरे यज्ञकर्म को सुन्दर भली-भांति आहुति दिया हुआ पूर्ण करो।

22. 'सर्व वै पूर्ण स्वाहा' हे प्रभो! आपकी कृपा से सब यज्ञकर्म निश्चय से पूर्ण हो गया।

दिल्ली एवं दिल्ली के आस-पास के क्षेत्रों में नि:शुल्क यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें -आचार्य सत्य प्रकाश, मो. 09650183335.

-आचार्य चन्द्र शेखर शर्मा, आर्य समाज मन्दिर, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

व्यायाम शिक्षक कहा करते थे 'आर्य समाज के सत्संग में जाने से बुद्धि मिलती है'

मैं ग्राम पथरोट जि. अमरावती (महाराष्ट्र) का निवासी हूं। गांव के बीचो-बीच व्यायामशाला थी। हम सब बच्चे खेलने शाम के वक्त वहां जाते थे। व्यायाम शिक्षक स्व. बवनसा खड़ेकर हम सबको कहा करते थे 'व्यायाम करने से' शरीर स्वस्थ और निरोगी बनता है। लेकिन आर्य समाज के सत्संग में जाने से बुद्धि मिलती है और वे हम बच्चों को आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में ले जाते।

आर्य समाज में मंत्र पाठ स्पर्धा-गायत्री मंत्र स्पर्धा- कथा-कथन- स्पर्धाओं में पुरस्कार मिलने के लालच से सभी बच्चे सम्मिलित होते। ऋषि बोद्योत्सव पर ऋषि की जीवनगाथा सुनकर मैं बहुत प्रभावित हुआ। एक बार सत्संग में एक सत्यदेव नामक साधु ने बताया कि आर्य समाज के गुरुकुलों में मुफ्त में संस्कृत पढ़ाई जाती है। नौकरी भी मिलती है। मेरे मन में पढ़ने की बहुत लालसा थी।

माता-पिता का एक ही लड़का होने से वे मुझे पढ़ने बाहर भेजना नहीं चाहते थे। इसलिए एक दिन मैं घर से भाग कर सीधे स्व. पं. बुद्ध देव जी विद्यालंकार के प्रभात आश्रम में पहुंचा। वहां हमारे गांव के स्व. पं. जयदेवजी शास्त्री पढ़ते थे। उन्होंने कहा यहां केवल 'शास्त्री' में पढ़ने वाले ब्रह्मचारी रहते हैं। आप स्वामी आत्मानन्द जी के उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर में जाइए और एक पत्र लिखकर दिया।

उपदेशक महाविद्यालय का वातावरण देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ। स्वामी जी प्रचारार्थ बाहर गए थे। पढ़ाने वाले स्नातक जी ने मुझ से कहा जिन्होंने मैट्रिक में संस्कृत विषय पढ़ा है, उनको ही यहां प्रवेश दिया जाता है। आपको प्रवेश देने में हम असमर्थ हैं। साथी ब्रह्मचारियों ने कहा ''स्वामी जी'' से मिलिए। मैं स्वामी आत्मानन्द जी के कमरे में गया। चरण वंदना कर बैठ गया। अपना परिचय देकर प्रार्थना की 'मैं संस्कृत पढ़ने घर से भाग आया हूं।' स्वामी जी ने नियम दोहराते हुए कहा नियम तो यही है लेकिन अष्टाध्यायी के सूत्र कण्ठस्थ कर सुना दो तो प्रवेश मिलेगा। मैंने स्वीकार किया। आठ दिनों के बाद स्वामी जी से मिलने गया। संयोग से वहां स्व. स्वामी ओमानन्द जी भी उपस्थित थे। स्वामी जी ने कहा सूत्र कण्ठस्थ किए हैं? मैंने कहा हां। सुनाओ। मैंने अष्टाध्यायी के प्रथम अध्याय के पूर्ण सूत्र सुना दिए। सुन कर दोनो परस्पर देखते हुए हंसने लगे। मैंने सोचा कोई गलती हो गई। इस वास्ते हंसने लगे। स्वामी ओमानन्द जी ने पूछा कहां के रहने वाले हो? मैंने जवाब दिया महाराष्ट्र का रहने वाला हूं। पिता जी क्या काम करते हैं? मैंने जवाब दिया कि मंदिर में पूजा-पाठ करते हैं। घर से क्या सहायता आती है? कुछ भी नहीं। स्वामी ओमानन्द जी ने कहा 'यहां प्रवेश लेने आये हो' ओमानन्दजी ने कहा कि मेधावी छात्र है। इसे प्रवेश दीजिए। मैं इसके लिए प्रतिमाह एक किलो घी भिजवा दिया करुंगा और जब तक मैं यमुनानगर में पढ़ता रहा तब तक स्वामी ओमानन्द महाराज संस्थापक व संचालक गुरुकुल झझर घी भेजते रहे।

परीक्षाक्रम में निर्धारित पाठ्यक्रम के ग्रंथो के अतिरिक्त स्वामी विरजानन्द, महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, पं. लेखराम जी का जीवन चरित्र पढ़ने से मेरे उपर अनोखा जादू छा गया। हरियाणा-पंजाब के आर्य भाइयों के सेवाभाव से भी अत्यधिक प्रभावित हुआ। पांच बार सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने से अंध श्रद्धा दूर हुई और मैं आर्य समाजी बना।

आर्य समाज द्वारा चलाए गए 'हिन्दी आन्दोलन' में सत्याग्रह कर जेल में गया था। आर्य समाज कपूरथला तरनतारन आकोला, शोलापुर, अमरावती में आर्य समाज का प्रचार-प्रसार करते हुए आज मैं आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ नागपुर का प्रधान हूं।

पं. सत्यबीर चीन्चू जी शास्त्री
प्रशान्त नगर अमरावती जि. अमरावती (महाराष्ट्र)

जो महानुभाव किसी की प्रेरणा/विचारधारा से आर्य समाजी बने उनके लिए आर्य संदेश में एक नया स्तंभ 'मैं आर्य समाजी कैसे बना' प्रारंभ किया गया है। आप भी अपने प्रेरक प्रसंग इस स्तम्भ हेतु अपने फोटो के साथ -'आर्य संदेश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' अथवा ईमेल aryasabha@yahoo.com द्वारा हमें भेज सकते हैं। आर्य संदेश के आगामी अंकों में इसे निरंतर प्रकाशित किया जाता रहेगा। -संपादक

Continue from last issue

Glimpses of the Atharva Veda

-Priyavrata Das

Invoking the Bounties of Nature

"May the wind blow in happiness for us; may the sun warm up for our happiness. May the days be full of happpiness to us. May the night bring happiness. May the dawn brighten up with happiness for us."

"May heaven and earth, invoked from the earliest times, be for our happiness; may the midspace be for our happiness with charming appearance. May the herbs and forest trees be for our happiness; may the victorious Lord of the distant regions be favourable to our felicity."

शं नो वातो वातु शं नस्तपतु सूर्यः। अहानि शं भवन्तु नः शं रात्री प्रति धीयतां शमुषा नो व्युच्छतु।। (Av.vII.69.1)

Sam no vato vatu sam nastapatu suryah.

ahani sam bhavantu nah sam ratri prati dhiyatam samusa no vyochhatu..

शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु।

शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः।। (Av.XIX.10.5)

Sam no dyava prthivi purvahutau samantariksam drsaye no astu.

sam na osadhirvanino bhabantu sam no rajasaspatirastu jisnuh..

Virtues that Sustain the Earth

Chapter XII, hymn I, verse I enumerates six virtues of the people that keep up and sustain the earth. These virues inspire the citizens of any country as well. Firstly, truthfulness in thought, speech and action of citizens is the bed-rock for the sustenance of the country. Their correct conduct in abiding by the law of the land keeps the country safe from falling. This becomes possible when the inhabitants are resolute in their normal duties to follow the prescribed rules. A country becomes strong when its occupants possess a strong will and work hard, keeping in view the prosperityof the land as a whole. Self-Confidence and control of senses of the ruler and the ruled are the prime requirements for the progress of the country. These qualities are enlunciated in the first verse of the hymn as below: Great truth, irresistale righteousness, devotion, hard labour of perseverance, determination and sacrifice sustain the earth or the motherland.

सत्यं बृहदृतमुग्र दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।

सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।। (Av.XII.1.1)

Satyam brhadrtamugram diksa tapo brahma yajnah prthivim dharayanti.

sa no bhutasya bhavyasaya patnyurum lokam prthivi nah krnotu..

The Two Dogs of Yama

The speculative idea Commonly prevalent is that a dying man shall soon meet his death if dogs bark nearby. Although the notion is without logic, the fact remains that it is an aberration of a beautiful thought of a vedic verse that reads as follows:

"May the black one and the bridled one, two dogs guarding the path, sent out by the controller Yama, not seize you. Come hither towards us. Do not be ill-tempted. Stay not here with your mind inclined to the further side."

Day and night are metaphorically described as two dogs who do not see each other out of envy. Yama, in Vedic texts refers to the eternal time whose day and night are standard components caused by the rotation of earth. These two are said to be faithful messengers of Yama. Like dogs they are obdient to benevolent persons but they bark at and bite the wicked ones. All the virtuous and the vicious on earth breathe their last alike in course of time. They are auspicious or otherwise depending on how they have lived their life. The honest accomplish good deeds but a malignant one causes grief in the hearts of the people. At the end, they leave their physical abode dragged by time. The verse exhorts upon the living ones to utilise time purposefully for the welfare of people.

श्यामश्च त्वा मा शबलश्च प्रेषितौ यमस्य यौ पथिरक्षी श्वानौ।

अर्वाङेहि मा वि दीध्यो मात्र तिष्ठः पराङ् मना।। (Av.V111.1.9)

Syamasca tva ma sabalasca presitau yamasya yau pathirlaksi svanau.

arvanehi ma vi didhyo matra tisthah paranmanah..

To Be Continue...

ग्रन्थ परिचय

महर्षि द्वारा लिखित एवं लिखवाये गये अप्रकाशित ग्रन्थ

महर्षि दयानन्द सरस्वती के कुछ ग्रन्थ ऐसे भी हैं, जो छापे नहीं गये थे। इन अमुद्रित ग्रन्थों की सूची निम्नलिखित है–1. ऋग्वेद मंत्र सूची, 2. यजुरथर्व मंत्र सूची, 3. अथर्वमंत्र सूची, 4. अकारादि क्रम से चार वेद और ब्राह्मणों की सूची, 5. निरुक्तादि विषय सूची, 6. ऐतरेय ब्राह्मण सूची, 7. शतपथ ब्राह्मण सूची, 8. तैत्तिरीयोपनिषद् मिश्रित सूची, 9. ऋग्वेद विषयस्मरणार्थ सूची, 10. निरुक्तशतपथमूल सूची, 11. शतपथ ब्राह्मण सूची, 12. धातुपाठ सूची, 13. वार्तिक संकेत सूची 14. निघण्टु सूची, 15. कुरान सूची, 16. बाइबल सूची, 17. जैन धर्म सूची

यह सूची वैदिक यन्त्रालय की सन् 1991–93 की प्रकाशित सम्मिलित रिपोर्ट में वहां विद्यमान अमुद्रित पुस्तकों की है। इस सूची में पहले नं. पर 'चतुर्वेद विषय सूची' नामक पुस्तक का नाम है, परन्तु इस पुस्तक को बाद में परोपकारिणी सभा ने सं. 2028 में छपवा दिया गया था। अतः उस सूची में 17 के स्थान में 18 संख्या है।

'परोपकारिणी सभा' की संवत् 1942 (सन् 1885) की 'आवेदन' नामक रिपोर्ट में कुछ अन्य अमुद्रित पुस्तकों का भी उल्लेख है जो निम्नलिखित हैं–

19. 44 वार्तिक सभाष्य, 20. 73 मनुस्मृति के उपयोगी श्लोकों का संग्रह, 21. 74 विदुरप्रजागर के उपयोगी श्लोकों का संग्रह, 22. 81 ओषधियों का यादी पत्र, स्वामी जी के लिखे हुए, 23. 83 कुरान हिन्दी भाषा में अनुवाद, स्वामी जी का बनाया हुआ, 24. 94 प्राकृत भाषा का संस्कृत भाषा के साथ अनुवाद अस्त व्यस्त, 25. 95 जैन फुटकर श्लोकों का संग्रह स्वामी जी कृत, 26. 96 रामसनेही मत गुटका, श्री पं. ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु की डायरी में अमुद्रित हस्तलिखित पुस्तकें निम्नलिखित हैं:-

1. चतुर्वेद विषय सूची, 2. ऐतरेय ब्राह्मण सूची, 3. शतपथ विषय सूची, 4. ऋग्वेद विषय सूची, 5. अथर्वकाण्ड 19–20 विषय सूची, 6. ऐतरेयोपनिषद् विषय सूची, 7. छान्दोग्योपनिषद् सूची पत्र, 8. इन्जील की सूची, 9. कुरान की सूची, 10. जैनमत श्लोक, 11. ऋग्वेद–सूक्त सूची, 12. शतपथ श्लिष्ट प्रतीक सूची, 13. निरुक्त–शतपथ की मूल सूची, 14. कुरान मूल हिन्दी, 15. वार्तिकपाठ–आठों अध्यायों का, 16. महाभाष्य का संक्षेप

इन उपरिलिखित पुस्तकों के अतिरिक्त 'ऋग्वेद के 61 सूक्तों का बृहद् भाष्य' भी अप्रकाशित ग्रन्थ है जिसका उल्लेख उपर्युक्त दोनों सूचियों में नहीं है।

प्रश्न 1. जब ऋग्वेद के सप्तम मंडल के 62 वें सूक्त के दूसरे मंत्र तक का पूरा भाष्य उपलब्ध और प्रकाशित है तो इन 61 सूक्तों के अलग से प्रकाशित न होने से भी क्या हानि है?

उत्तर: इन अप्रकाशित 61 सूक्तों का भाष्य इस सम्पूर्ण भाष्य से पृथक् है। जैसा कि 'वेद भाष्य के दो नमूनों' में उल्लेख किया गया है कि दूसरे नमूने में ऋषि के प्रथम सूक्त के प्रत्येक मंत्र के दो–दो अर्थ (भौतिक और परमार्थिक) विस्तृत रूप में किये गये थे। उसी प्रकार से इन अगले 61 सूक्तों का दोनों प्रकार से विस्तृत अर्थ महर्षि ने किया था। इसे ऋग्वेद का बृहद् भाष्य कहा जा सकता है। यह अप्रकाशित भाष्य सामान्य वेदभाष्य से अलग ढंग का है। अतः बहुत महत्त्वपूर्ण है।

प्रश्न 2. क्या यह कहीं पर सुरक्षित है?

उत्तर: हां, यह परोपकारिणी सभा के संग्रह में सुरक्षित है। पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी के 'ऋषि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों का इतिहास' नामक ग्रन्थ के पृ. 289 में दिये गये उल्लेख से भी पता चलता है कि उन्होंने इस भाष्य को पढ़ा व इसके महत्त्व को समझा था।

प्रश्न 3. क्या उपरिलिखित सूचियों में उल्लिखित सभी अप्रकाशित ग्रन्थ सुरक्षित हैं?

उत्तर: यह तो अनुसंधान एवं श्रमजन्य कार्य है कि परोपकारिणी सभा में इन ग्रंथों को खोजा जाए और उनकी उपलब्धि और अनुपलब्धि को जाना जाए। वैसे पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी द्वारा रचित 'ऋषि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थों का इतिहास' के चतुर्दश (14वें) अध्याय में 'कुरान का हिन्दी अनुवाद', 'शतपथ श्लिष्ट प्रतीक सूची; 'निरुक्त–शतपथ की मूल सूची;' 'वार्तिकपाठ संगह', महाभाष्य का संक्षेप' (ये दूसरी सूची में क्रमशः 14,12,13, 15 और 16 संख्या पर उल्लिखित हैं।) का संक्षिप्त परिचय मिलता है। इससे ज्ञात होता है कि कम से कम ये ग्रन्थ तो सुरक्षित होने चाहिए।

प्रश्न 4. क्या महर्षि के काल तक कुरान एवं बाइबिल के हिन्दी अनुवाद उपलब्ध नहीं थे?

उत्तर: महर्षि के काल में बाइबिल का हिन्दी अनुवाद तो मिलता था जो पादरियों ने किया था। मुसलमानों के इस्लाम की समीक्षा के लिए कुरान का हिन्दी अनुवाद आवश्यक था। क्योंकि ऋषि उर्दू अथवा अरबी या फारसी का ज्ञान नहीं रखते थे। अतः उन्होंने संवत् 1935 (1878 ई.) में हिन्दी में कुरान का अनुवाद करवाया था। इससे पहले सन् 1877 ई. में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी कुरान का अनुवाद किया था, परंतु वह सम्पूर्ण कुरान का नहीं अपितु प्रारम्भ के थोड़े से भाग का ही था। इसलिए पूरे कुरान का हिन्दी अनुवाद कराना आवश्यक था।

प्रश्न 6. ऋषि ने यह अनुवाद किससे करवाया था?

उत्तर: यह विदित नहीं हो पाया है, परन्तु अनुवाद के संशोधन करने वाले महाशय का नाम मुंशी मनोहर लाल जी रईस (गुडहट्टा पटना निवासी) था। यह पत्रों आदि प्रमाणों से स्पष्ट है।

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें। -मो. 09540040339

संस्कृतम्

सत्यमेव जयते नानृतम्। (सत्यम्)

(1. प्रस्तावना, 2 सत्यस्योपयोगिता, 3. दृष्टान्ता:, 4. सत्यत्यागे हानय:, 5. उपसंहार:।)

अर्थात् कल्याणाय हितं सत्यं भवति। यद् वस्तु यथा विद्यते, तस्य तेनैव रूपेण कथनं प्रकाशनं लेखनं वा सत्यमिति अभिधीयते। परमेश्वरेण जिह्वा सदुपयोगार्थं दत्ता, अत: जिह्वाया: सदुपयोग: सत्यभाषणेन कर्त्तव्य:।

जगति सत्यस्य यादृशी आवश्यकता विद्यते, न तादृशी अन्यस्य कस्यचिद् वस्तुन:। सत्येनैव समाजस्य स्थिति: वर्तते। यदि सर्वेऽसत्यवादिनो भवेयुस्तर्हि न लोकस्य स्थिति: क्षणमात्रमपि भवितुं शक्नोति। सत्यस्यैव एष महिमा यद् वयं समाजे मनुष्येषु विश्वासं कुर्म:। अत: सिध्यति यत् सत्यं लोकस्याधारोऽस्ति। अत एवोच्यते-

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च, सतीभि: सत्यवादिभि:।
अलुब्धैर्दानशूरैश्च, सप्तभिर्धार्यते मही।।1।।

सत्यभाषणेन मनुष्यो निर्भीको भवति। सत्यभाषणेन तस्य तेजो यश: कीर्ति: विद्या गौरवं च वर्धन्ते। य: सत्यं वदति, स सर्वेभ्य: पापेभ्योऽपि निवृत्तो भवति। यदा स कस्मिंश्चित् पापे प्रवर्तते, तदा स चिन्तयति यद् अहं सत्यमेव वदिष्यामि, अत: सर्वेषां दृष्टिषु हीनो भविष्यामि, एवं स पापाद् विरमति। सत्यभाषणं वस्तुतो जीवने सर्वोत्तमं तपो वर्तते। अत एवोक्तम्-

अश्वमेधसहस्रं च, सत्यं च तुलया धृतम्।
अश्वमेधसहस्राद् हि, सत्यमेव विशिष्यते।।2।।

सत्यस्य प्रतिष्ठयैव संसारस्य कल्याणम्, अभ्युदय:, उन्नतिश्च भवन्ति। य: कश्चित् सत्यमाश्रयति, तस्य जीवनं सफलं। भवति। अत उच्यते-'सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्'। ये सत्यं पालयन्ति, ते सर्वोत्तमं धर्मं कुर्वन्ति। ये च सत्यं परित्यज्य असत्यं भजन्ते, ते महापातकं कुर्वन्ति। यतो हि असत्यभाषणेन स्वस्य हानि: नाशश्च भवत:। समाजस्य देशस्य लोकस्य च मिथ्याभाषणेन नाशो भवति। अत एवोच्यते-नहि सत्यात् परो धर्मो नानृतात् पातकं परम्।

सत्यस्य पालनार्थमेव महाराजो दशरथ: प्रियं पुत्रं रामं वनं प्रैषयत्। राजा हरिश्चन्द्र: सत्यपालनार्थमेव सर्वाणि दु:खानि असहत। युधिष्ठिर: सत्यभाषणस्य प्रभावादेव विजयमलभत।

महात्मा गांधिमहोदय: सत्यस्यैव सदा शिक्षामदात्। भारतस्य राजचिह्नेऽपि 'सत्यमेव जयते' इत्यादरेण उल्लिख्यते।

अत: सर्वैरपि लौकिकपारलौकिकाभ्युदयाय सत्यमेव सदा भाषणीयम्।

रचनानुवादकौमुदी

(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

पृष्ठ 1 का शेष

आरक्षण, व्यवस्था है ...

को सुधारा जा सकता है, जिससे सभी को मौका और न्याय मिल सके। दूसरा समाज के स्तर पर भारत में सदियों से सामाजिक अन्याय होता रहा है और कुछ जगह तो अभी भी जारी है। भारत में सामाजिक अन्याय का सबसे बड़ा कारण जातीय व्यवस्था रही है और इसके कारण सामाजिक प्रतिष्ठा कर्म के आधार पर नहीं, बल्कि जातिगत आधार पर मिली. जाति के आधार पर कुछ वर्गो ने आर्थिक संसाधनों पर कब्जा किया और कुछ को आर्थिक संसाधनों से वंचित रखा गया। आर्थिक संसाधनों की कमी के कारण योग्यता प्रभावित हुई और योग्यता के अभाव में पिछड़ापन आया और असमानता कम होने के बजाय बढ़ती ही गयी। इसी असमानता को कम करने के लिए विकल्प की तलाश की गई, इस असमानता को कम करने के लिए तीन विकल्प मौजूद थे, पहला विकल्प सुविधाओं का था यानी शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण आदि की सुविधाएं उन वर्गो को दी जाएं जिसे अभी तक उपलब्ध नहीं हुई हैं।

जो लोग आज आरक्षण को खारिज करते हैं, वो तो हमेशा से सामाजिक न्याय के सवाल को भी खारिज करते रहे हैं, ध्यान रहे कि किसी भी समाज में भिन्नताओं को स्वीकार करना उस समाज की एकता को बढ़ावा देता है न कि विघटन करता है। उदहारण के तौर पर अमरीकी समाज ने जब-तक अश्वेत और श्वेत के सवाल को स्वीकार नहीं किया, तब तक वहाँ विद्रोह की स्थिति थी और जब इसे सरकारी तौर पर स्वीकार कर लिया गया, तब से स्थितियाँ बहुत सुधर गई हैं। अगर पिछले 50 साल के सामाजिक भेदभाव को देखे तो एक बात जरूर देखें कि आरक्षण की व्यवस्था एक बहुत ही सफल प्रयोग रहा है, जिसमे समाज के हाशियाग्रस्त लोगों को एक सामाजिक आधार मिला है, किन्तु इसके बाद राजनैतिक स्वार्थवश इस व्यवस्था का जिस तरीके से दुरपयोग हुआ वह इसका दुखद पहलू रहा है। यदि अब सामाजिक आर्थिक रूप से सम्पन्न तबके भी इस व्यवस्था का उपयोग चाहेंगे तो सोचो भारत का भविष्य क्या होगा? **-राजीव आर्य**

पृष्ठ 3 का शेष

वैज्ञानिक भारत के ...

करते थे। उनका मानना था कि साधारण बुद्धि जिसे चमत्कार कहती है वह विशिष्ट बुद्धि मे विज्ञान (विशिष्ट ज्ञान) मात्र है। सृष्टिक्रम के नियमों के विरुद्ध कुछ भी संभव नहीं है। ईश्वर अजन्मा है। ईश्वर कभी अवतार नहीं लेता। भगवान शब्द से ईश्वर और ऐश्वर्यवान् व्यक्ति को संबोधित किया गया है। ईश्वर भी ऐश्वर्यवान् होने के कारण भगवान् है। भगवान् तथा ईश्वर को एक समझ लेने के कारण ईश्वरभक्त राम और कृष्ण जैसे आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तमों को ही ईश्वर समझ लिया गया है। हमारी संस्कृति ने प्रकृति को देव कहा है। प्रकृति के प्रत्येक घटक को देव मानकर पूजा गया है। पीपल, बड़, तुलसी जैसे अनीक उपयोगी वृक्षों की आज भी यत्र तत्र पूजा की जाती है। प्रकृति हमारे जीवन की संजीवनी शक्ति को संजोकर रखती है इसलिए इसकी रक्षा करना हमारा दायित्व है। यज्ञ को इसीलिए दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कृत्य कहा गया है क्योंकि इससे प्रकृति तथा संस्कृति को पोषण मिलता है।

आज सारी दुनिया में गंगा को लेकर शोर मचा हुआ है। सभी इसकी रक्षा के लिए चिंता करते हुए दीख रहे हैं। आज से लगभग 150 साल पहले स्वामी दयानन्द ने अपने पूना प्रवचन में कहा था- 'गंगा आदि नदियां जीवन दायिनी हैं। इन्हें मल-मूत्र से दूषित करना उचित नहीं है।' हम आस्था के नाम से गंगा को ही नहीं अपनी पूरी दुनिया को ही मलीन करने में लगे हुये हैं। नदी की पूजा नदियों के जल को पवित्र बनाए रखने में है। आरती से न तो गंगा का ही भला होगा और न ही हमारा अपना। किताब की पूजा का आधार उसका ज्ञान है। उसकी पूजा उसे पढ़कर ही कर सकते हैं। पुस्तक के इर्द-गिर्द अगरबत्ती घुमाने से कुछ नहीं होगा। इसलिए महर्षि ने लिखा कि यथायोग्य व्यवहार ही असली पूजा है। गंगा की आरती के नाम पर हजारों किलो फूल पत्ते नदी में बहा दिये जाते हैं। इसे पूजा कहना नादानी है। नदी के जल को सुरक्षित और संरक्षित रखने का प्रयास ही नदी की सच्ची पूजा है। हमारा देश आज भी अंधविश्वासों से घिरा हुआ नज़र आता है। प्रतिदिन हजारों लोग बैगाओं के चक्कर में अपनी जान गंवा बैठते हैं। विधवाओं को सम्मानजनक स्थिति मिलना आज भी दूभर है।

सती प्रथा के लिए स्वामी दयानन्द और उसके अनुयायियों ने एक सवाल समाज से किया था अगर पति की मौत के कारण पत्नी को सती हो जाना चाहिए तो पत्नी की मृत्यु पर पति को भी स्वयं को 'सता' करने की प्रथा आरम्भ करनी चाहिए। सती प्रथा के विरुद्ध सदियों तक एक लम्बा संघर्ष चलता रहा और अब समाज सहमत हो गया है कि सती-प्रथा एक सामाजिक बुराई है। वैतरणी पार कराने के ठेकेदार स्वयं नौका के अभाव में छोटी सी नदी पार नहीं कर पाते। ज्योतिष ने अभी तक लोगों को अकर्मण्य बनाने की दिशा मे ही कार्य किया है। अगर ज्योतिष ही व्यक्ति के गुण और दोषों को परखता है तो डॉक्टर और इंजीनियर की प्रवेश परीक्षा को रद्द करके ज्योतिष कार्यालय से ही नाम मंगवा लेने चाहिए थे। आज से डेढ़ सौ वर्ष पूर्व स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जन्म पत्री को शोक-पत्री कहकर संबोधित किया था। कर्म ही भाग्य का जनक है। भाग्य के चक्कर में कर्म का तिरस्कार नहीं किया जाना चाहिए। दिल्ली के एक प्राचार्य की बिटिया ने इसी जन्मपत्री के चक्कर में कल आत्म हत्या कर ली है। हम धर्म के चक्कर में बहुत ही भीरु हो गये हैं। स्वामी दयानन्द ने कालिदास के विचारों से सहमत होते हुए कहा है न तो सब पुराना ही सही है और न ही नया तिरस्करणीय है। जिसे हम पुराण कहते हैं, वह उनकी दृष्टि नवीन है। स्वामी जी की दृष्टि में सत्य विद्याओं का पुस्तक वेद ही प्राचीन है। जो ज्ञान-विज्ञान और तर्क पर खरा उतरता है, उस विचार का स्वागत किया जाना चाहिए।

आज भारत का मंगल चाहने वालों को स्वामी दयानन्द के मंगलकारी विचारों का स्वागत करना चाहिए। स्वामी दयानन्द ने धर्म तथा परंपरा के नाम पर पोषित अछूतवाद, सती-प्रथा, बाल विवाह, नारी-अशिक्षा, जाति-प्रथा, मृत-श्राद्ध, बाल-विवाह जैसी सभी अवैज्ञानिक तथा अतार्किक परम्पराओं का विरोध करके मंगलकारी मार्ग प्रशस्त किया है। भारत अपनी वैज्ञानिक प्रतिभा पर तब तक गर्व नहीं कर सकता जब तक भारत की विपन्न समझी जाने वाली उपेक्षित ग्रामीण जनता के मध्य वैज्ञानिक और तर्कपरक बुद्धि के विकास के लिए कोई सार्थक प्रयास नहीं किया जाता।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का आज से लगभग डेढ़ सौ साल पहले कुम्भ मेले में पाखंड खंडिनी पताका लहराना एक ऐतिहासिक घटना थी। इस पताका को आज और अधिक ऊंचा करने की आवश्यकता है। इस पताका के अभाव में ही संत के चोले में रामपाल जैसे असंत छिपने की कोशिश करते हैं। समाज को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ती है। जब तक भारत का संत समाज महर्षि दयानन्द अथवा वेद के विशुद्ध सत्य को समाज के सम्मुख रखकर अंधविश्वास तथा पाखंड के खिलाफ एक विराट जनांदोलन नहीं छेड़ता तब तक गुरुडम से निजात पाना मुश्किल है। **-डॉ. अजय आर्य, छत्तीसगढ़**

साप्ताहिक आर्य सन्देश

22 फरवरी 2016 से 28 फरवरी, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 25 फरवरी 2016/ 26 फरवरी, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 24 फरवरी, 2016

ओ३म्

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से

ऋषि बोधोत्सव एवं शिवरात्रि के अवसर पर आयोजित

विशाल ऋषि मेला

फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी विक्रमी सम्वत् 2072 तद्नुसार सोमवार, 7 मार्च, 2016

स्थान : रामलीला मैदान (तुर्कमान गेट साइड), नई दिल्ली-2

यज्ञ : प्रातः 8-30 बजे

विभिन्न कार्यक्रम : प्रातः 10 बजे से

खेल प्रतियोगिताएं | भाषण प्रतियोगिताएं | विद्वत्त गोष्ठी

मधुर भजन एवं संगीत | बच्चों द्वारा आकर्षक प्रस्तुतियां | सार्वजनिक सभा

सार्वजनिक सभा : दोपहर 1.30 बजे से सायं 4.00 बजे तक

अभिनन्दन : इस अवसर पर 'श्री सुरेश ग्रोवर आर्य वैदिक विद्वान् पुरस्कार', 'डा0 मुमुक्षु आर्य माता विद्यावती पुरस्कार' एवं 'माता छजियादेवी स्मृति पुरस्कार' से आर्य विद्वानों को सम्मानित किया जाएगा।

इस विशाल समारोह में आप दलबल, परिवार एवं इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पंजी०)

15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली- 110001

दूरभाष : 011-23360150, ई मेल : aryakendriyasabhadelhirajya@gmail.com

प्रतिष्ठा में,

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव पर बच्चों को दें

बाल (लघु) सत्यार्थ प्रकाश

मूल्य मात्र 10 रुपये प्रति

नि:शुल्क वितरण हेतु 1000 प्रति लेने पर 20% की विशेष छूट

प्राप्ति स्थान: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-01, (09540040339)

पाठकों से अनुरोध

आर्य सन्देश के पाठकों से अनुरोध है कि वे आर्य सन्देश सदस्यता शुल्क का चैक 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' की बजाए 'आर्य सन्देश' के नाम से ही प्रेषित करें।

-सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अमूल्य देन उर्दू भाषियों के लिए

उर्दू सत्यार्थ प्रकाश

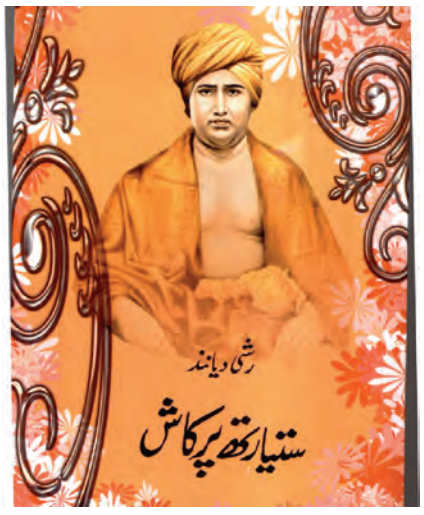

प्राप्ति स्थान:- वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, मो. 09540040339

आर्य संदेश इंटरनेट पर पढ़े :

www.thearyasamaj.org/article

फेसबुक पर हमसे जुड़ें :

margdrashan@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धांतिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह